DATE 10.10.24
PAGE No 1

कुंजी

Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 नमक का दारोगा' कुंजी")

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

संक्षेप में:-

(क) प्रश्न- लोग चोरी-छिपे नमक का व्यापार क्यों करने लगे?
उत्तर- जब ईश्वर प्रदत्त वस्तु 'नमक' पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगा दिया गया तो लोग चोरी-छिपे नमक का व्यापार करने लगे। ऐसा होने के कारण भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी को बढ़ावा मिला।

प्रश्न(ख) 'दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी' इस वाक्य का क्या अर्थ है? जीभ के जागने का क्या असर हुआ?
उत्तर- "दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी।" इस वाक्य का अर्थ है कि संसार को निंदा रस में रुचि बहुत होती है। वे निंदा करते भी हैं और सुनते भी हैं। इसी तरह जब अलोपीदीन को हथकड़ियाँ लग गईं तो लोगों के लिए वह चर्चा का विषय बन गया, बातें करने के लिए। चुगली करने के लिए। वे आनंदित हो-होकर यह बात एक-दूसरे तक पहुँचा रहे थे।

प्रश्न(ग) वंशीधर को नौकरी से क्यों निकाल दिया गया?
उत्तर- वंशीधर एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ सरकारी अफसर थे। उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए पंडित अलोपीदीन की हिरासत में लेकर उनसे दुश्मनी मोल ले ली थी। एक भ्रष्ट और दूसरा ईमानदार, दोनों में भयानक टकराव हुआ। उस टकराव की कीमत उन्हें मुअत्तल (पदच्युत) होकर चुकानी पड़ी। बस! इसी कारण से उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। (पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 10.10.24
PAGE No. 2

कुंजी

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 नमक का दारोगा) 'कुंजी'

विस्तार से:-

(क) प्रश्न- दारोगा के पिता ने अलोपीदीन से क्या-क्या कहा?
उत्तर- पंडित अलोपीदीन के आते ही दारोगा के पिता ने उन्हें झुककर दंडवतकीऔर लल्लो-चप्पो की बातें करते हुए बोले, "हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आए। आपको कौन-सा मुँह दिखावें, मुँह पर तो कालिख लगी हुई है। किंतु क्या करें, लड़का कपूत है, नहीं तो आपसे क्या मुँह छिपाना पड़ता?"

ये सब बातें उन्होंने इसलिए कहीं क्योंकि अलोपीदीन अपने इलाके के धनी व्यक्ति थे। वे अपने धन के बल पर लोगों के ईमान-धर्म को खरीद लेते थे। लेकिन वे वंशीधर को नहीं खरीद सके। बस यही उनकी दुश्मनी का कारण था। वंशीधर के पिता को यह भी डर था कि कहीं अलोपीदीन अपने खरीदे लोगों से उन्हें पिटवा न दें।

प्रश्न (ख) अलोपीदीन का मुकदमा जल्दी ही समाप्त हो गया। क्यों?
उत्तर- अलोपीदीन का मुकदमा जल्दी समाप्त इसलिए हो गया क्योंकि अदालत में सभी अधिकारी उनके भक्त, वकील उनके आज्ञापालक और चपरासी-चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। वहाँ पर अलोपीदीन को बचाने के लिए बड़े-बड़े वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन के बीच युद्ध छिड़ गया था। अदालत एक न्याय का दरबार था, परंतु उनके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। मुंशी वंशीधर के पास सत्य और स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र और बल न था। बस न्यायालय के पक्षपात के कारण ही मुकदमा शीघ्र समाप्त हो गया।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 10.10.24
PAGE No. 3

कुंजी

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 10 'नमक का दारोगा') 'कुंजी'

प्रश्न (ग) अलोपीदीन वंशीधर को ही मैनेजर क्यों बनाना चाहते थे?

उत्तर- अलोपीदीन वंशीधर को ही अपना मैनेजर बनाना चाहते थे क्योंकि वंशीधर एक ईमानदार, धर्मपरायण और कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति थे जिन्होंने अपने धर्म और कर्त्तव्य की खातिर धन की उपेक्षा कर ठुकरा दिया। वे धर्म का सहारा लेकर अटल खड़े रहे। उन्हें कोई भी उनके कर्त्तव्य के मार्ग से नहीं हटा सका। बस! इन्हीं सब गुणों के कारण अलोपीदीन ने वंशीधर को अच्छे वेतन के साथ सभी सुख-सुविधाएँ प्रदान कर अपनी संपूर्ण सम्पत्ति का स्थायी मैनेजर नियुक्त कर लिया।

(अंतिम पृष्ठ - 3)

Scanned with CamScanner